REVIEW OF RESEARCH

मीरजापुर जनपद में भूमि उपयोग का वितरण प्रतिरूप

सन्त लाल[1] , डॉ. डी.पी. सिंह[2]

[1] शोध छात्र , असिस्टेंट प्रोफेसर , का. सु. साकेत पी.जी कालेज अयोध्या उ0प्र0
एवं शोध छात्र एम0एल0बी0 शासकीय उत्कृष्ट परास्नातक महाविद्यालय ग्वालियर, म0प्र0
[2] मार्गदर्शक , एसो. प्रोफेसर, भूगोल विभाग ,राजकीय कालेज राघवगढ़, म.प्र.

ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)

प्रस्तावना :

भूमि कृषि का सर्वाधिक महत्वपूर्ण तथा सर्वसुलभ प्राकृतिक संसाधन है। भूमि पर ही मनुष्य के समस्त सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं राजनैतिक क्रिया कलाप सम्पन्न होते हैं। मानवीय आवश्यकता के दृष्टिकोण से भूमि अपनी क्षमतानुरूप संसाधन के रूप में स्थित रहती है अर्थात् यह मानव तथा उसके समस्त क्रियाकलापों हेतु आधार है। भूमि उपयोग मानव द्वारा विभिन्न कार्य के माध्यम से उसके उपयोग की प्रक्रिया हैं। जो विभिन्न उद्देश्यों के लिए प्रयुक्त होती हैं।

मीरजापुर जनपद उत्तर प्रदेश के द0 पू0 भाग में स्थित है। गंगा नदी जनपद के मध्य से प्रवाहित होती है। जनपद का दक्षिणी भाग प्राचीन विन्ध्याचल पर्वत व पठारी भाग तथा उत्तरी भाग का निर्माण गंगा नदी द्वारा निर्मित समतल व उपजाऊ है। जनपद का कुल क्षेत्रफल 4521 वर्ग कि0मी0 तथा कुल जनसंख्या 2496970 है।

भूमि उपयोग प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक कारकों के संयोग का परिणाम होता है। तथा मनुष्य की बदलती आवश्यकताओं के अनुसार यह परिवर्तनशील रहती है, जिसका प्रत्यक्ष प्रभाव कृषि तथा विकास पर निर्भर करता है। जनपद मीरजापुर के भूमि उपयोग का बड़ा हिस्सा शुद्ध बोए गए क्षेत्रफल के अन्तर्गत है। 1995–96 में शुद्ध बोया गया क्षेत्र जनपद के कुल भू–भाग का 46.23 प्रतिशत था, जो 2005–2006 में 44.20 एवं 2014–15 में 42.19 प्रतिशत हो गया है। जनपद के भूमि उपयोग में दूसरा महत्वपूर्ण हिस्सा वनक्षेत्र का है। सन् 1995–96 में जनपद के कुल भू भाग का 23.11 प्रतिशत हिस्सा वन क्षेत्र के अन्तर्गत था, जो 1999–2000 में बढ़कर 30.13 प्रतिशत हो गया तथा पुनः 2014–15 में कम होकर 24.17 प्रतिशत ही रह गया है। जनपद में परती भूमि का हिस्सा जो 1995–96 में 11.50 प्रतिशत वह 1999–20 में कम होकर 5.20 प्रतिशत रह गया था किन्तु 2005–06 में बढ़कर पुनः 9.10 प्रतिशत तथ 2014–15 में 10.19 प्रतिशत हो गया है। जनपद के एक बड़े हिस्से पर पठारी व पहाड़ी भाग का विस्तार है। जनपद में कृषि में लिए अयोग्य भूमि का हिस्सा 1995–95 में 12.65 प्रतिशत था, जो 2014–15 में बढ़कर 14.40 प्रतिशत हो गया। कृषि के लिए अयोग्य भूमि के अन्तर्गत ऊसर युक्त भूमि, व कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग (सड़क, नहर, रेल आदि) में लायी गयी भूमि को शामिल किया जाता है। ऊसर एवं कृषि अयोग्य भूमि का हिस्सा 1995–96 में 3.47 प्रतिशत था, वहीं भूमि उपचार व सुधार के परिणास्वरूप सन् 2005–06 में 2.03 प्रतिशत तथा 2014–15 में कम होकर 1.80 प्रतिशत ही रह गया है। जो कृषि के दृष्टिकोण से काफी महत्वपूर्ण है। कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग में लायी गयी भूमि का प्रतिशत जनपद में सड़क, यातायात व अन्य निर्माण कार्य में गति के परिणाम स्वरूप कृषि योग्य व अन्य उपयोग में लायी जा रही भूमि का उपयोग बदल रहा है। पठारी व

पहाड़ी तथा छोटी–छोटी नदियों द्वारा वीहड़ व बंजर क्षेत्र भी बहुतायत मात्रा में पाये जाते हैं। जनपद में सन् 1995–96 में 4.08 प्रतिशत भाग पर कृषि योग्य बंजर भूमि का विस्तार था, लेकिन यह क्षेत्र 1999–2000 को कम होकर 3.34 प्रतिशत तथा 2014–15 में 2.21 प्रतिशत तक हो गया । बंजर भूमि के उद्धार व उपयोग में वृद्धि के परिणामस्वरूप इस वर्ग के क्षेत्र का कम होता जनपद में कृषि व विकास के दृष्टिकोण से काफी अच्छा संकेत है।

जनपद मीरजापुर : सामान्य भूमि उपयोग प्रतिरूप

क्र. सं.	भूमि उपयोग की श्रेणी	1995–96	1999–2000	2005–06	2010–11	2014–15
1	शुद्ध बोया गया क्षेत्रफल	46.24	47.65	44.29	42.26	42.19
2	परती भूमि	11.50	5.20	9.10	11.19	10.19
3	वन	23.11	30.13	24.27	24.14	24.17
4	उद्यान, बाग बगीचे एवं झाड़ियाँ	2.20	1.54	6.65	6.33	6.32
5	चारागाह	0.22	0.20	0.11	0.11	0.11
6	कृषि योग्य बंजर भूमि	4.08	3.34	3.41	2.98	2.21
7	कृषि के उपयोग एवं ऊसर भूमि	3.47	2.13	2.03	1.92	1.80
8	कृषि के अलावा अन्य उपयोग में लायी गयी भूमि	9.18	9.94	10.15	11.07	12.60

जनपद मीरजापुर : सामान्य भूमि उपयोग प्रतिरूप (2014–15)

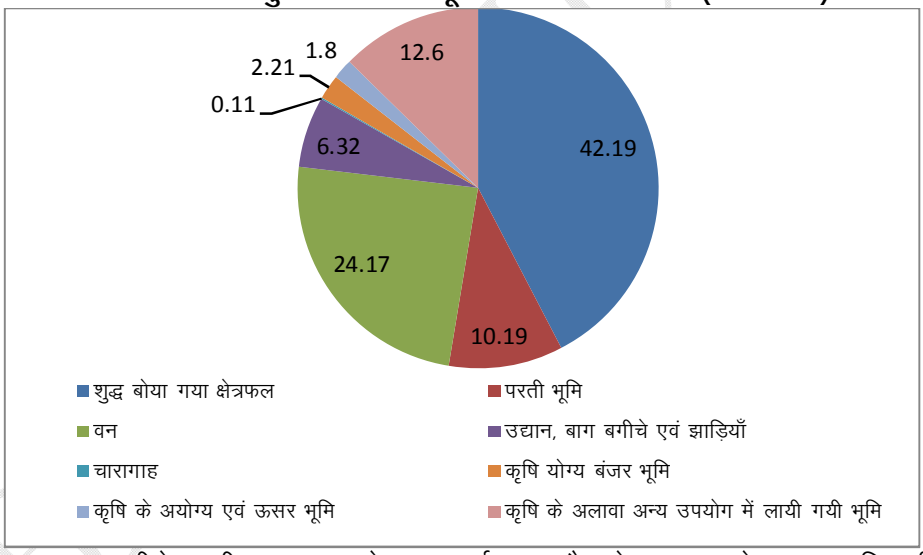

उद्यान व बाग बगीचे ग्रामीण भारत के महत्वपूर्ण भाग है। ये तथा फलोत्पादन, हरियाली व प्राकृतिक सौन्दर्य में वृद्धि के साथ ही आर्थिक दृष्टिकोण से भी काफी महत्वपूर्ण है। जनपद के कुल क्षेत्रफल के (1995–96) 2.20 प्रतिशत भाग पर बाग–बगीचों व झाड़ियों का विस्तार था। सन् 1999–2000 में इनका हिस्सा कम होकर 1.54 प्रतिशत हो गया किन्तु 2010–10 में इसकी हिस्सेदारी 6.33 प्रतिशत हो गयी तथा 2014–15 में भी इसका विस्तार 6 प्रतिशत से अधिक था।

पशुपालन कृषि का महत्वपूर्ण अंग है तथा चारागाह पशुपालन के लिए अति महत्वपूर्ण है। पशु कृषि में सहायक तो है ही इसके अलावा जैविक खाद व ईंधन के साथ ही पशु दुग्ध,मांस व ऊन के माध्यम से किसानों के आय के भी प्रमुख स्रोत हैं। जनपद में चारागाह का प्रतिशत काफी कम है। यहां कुल क्षेत्रफल के 0.22 प्रतिशत (1995–96) भाग पर चारागाह था जो 2005–06 में कम होकर 0.11 प्रतिशत हो गया तथा 2014–15 में भी जनपद में चारागाह का प्रतिशत 0.11 प्रतिशत ही था।

जनपद के कुल भूमि उपयोग प्रतिरूप में सर्वाधिक हिस्सा शुद्ध बोये गये क्षेत्र का था। सन् 2014–15 में शुद्ध बोये गये क्षेत्र कर हिस्सा 42.19 प्रतिशत था किन्तु 1995–96 के मुकाबले लगभग 4 प्रतिशत कम था। इसका कारण जनपद में सड़क,रेलवे व नगरीय विस्तार था। अध्ययन क्षेत्र में कृषि प्रमुख व्यवसाय है तथा शुद्ध बोया जाने वाला क्षेत्र की कृषि का मुख्य आधार है जबकि अनियोजित नगरीय विस्तार तथा परिवहन व संचार के स्थान पर नियोजित नगरीय नीति, परिवहन नेटवर्क तथा औद्योगिक विकास हेतु कृषि योग्य भूमि में नुकसान न हो इसका ध्यान दिया जाय तथा बंजर, ऊसर भूमि का पुनरूद्धार किया जाय तथा मड़िहान, राजगढ़, लालगंज व हलियांविकास खण्डों में सिंचाई की भी समुचित व्यवस्था कर कृषि योग्य भूमि का विस्तार किया जा सकता है।

राष्ट्रीय वन नीति के अनुसार देश के कम से कम 33 प्रतिशत भाग पर वन का विस्तार होना आवश्यक है। जनपद में वन व बाग–बगीचों तथा झाड़ियों को मिलाकर कुल 30.49 प्रतिशत भाग पर विस्तृत है। अतः वन क्षेत्र के और विस्तार की संभावना है। जनपद के परती भूमि पर वृक्षारोपण कर वन क्षेत्र का विस्तार किया जा सकता है। इसके अलावा सड़कों के किनारे तथा ग्राम समाज की भूमि पर वृक्षारोपण किया जा सकता है। साथ ही वन कानून का कड़ाई से पालन कराना चाहिए। जनपद में चारागाह का क्षेत्र बहुत ही कम है, जबकि पाशुपालन के साथ ही कृषि तथा किसानों के विकास के लिए भी महत्वपूर्ण साबित हो सकता है।

इस प्रकार जनपद में नियोजित तरीके से भूमि उपयोग के माध्यम से ही जनपद का समग्र व संपोषणीय व टिकाऊ विकास किया जा सकता है। पठारी व मैदानी क्षेत्रों में भौतिक विशेषताएँ अलग–अलग होने से क्षेत्रीय आवश्यकता व भूमि उपयोग प्रतिरूप में संतुलन स्थापित करना अति आवश्यक है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची–

1. Barlow, R. and Jonson V.W. (1954) : Land Problems and policies, M.C. Crow Hillbook, Company in New York, pp-99.
2. Singh, B.B. (1979) : Agricultural Geography IN Hindi, Tara Publication Varanasi.
3. stamp L.D. (1931) : The Land Utilization survey of Geographical journal 78.
4. Ali, S.M. (1949) : Land Utilization survey in India, The geography, 2.
5. Shafi, M. (1960) :Land Utilization of Eastern U.P., Aligarh University Press, Aligadh.
6. Bhatiya, S.S. (1965) : Patterns of Crop combination and Diversification in India, Economic geography.
7. Singh, B.N. (1968) :"Agricultural Efficiency in India", the Geographers.
8. हुसैन, माजिद (2003) : कृषि भूगोल, रावत पब्लिकेशन, जयपुर।

LBP PUBLICATION